

सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2022 का नवम अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इसमें सर्वप्रथम महामण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्दपुरीजी द्वारा लिखित YOGA SUTRAS OF PATANJALI शोध लेख में पातंजलयोगसूत्र के प्रतिपाद्य की आधुनिक सन्दर्भ में उपयोगिता दर्शायी गयी है। तत्पश्चात् डॉ. प्रवीण पण्ड्या द्वारा लिखित 'दश वाद और ब्रह्मसिद्धान्त' लेख में सृष्टि प्रक्रिया के वैदिक पूर्व पक्ष एवं उत्तर पक्ष को दर्शाते हुये सृष्टि उत्पत्ति विषयक सिद्धान्तों का विश्लेषण किया गया है। देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा लिखित 'पं. मधुसूदन ओझा के मत में देव एवं असुर' शोधलेख में वेदविज्ञानानुसार देव एवं असुर तत्त्वों की विवेचना प्रस्तुत की गयी है। इसी क्रम में डॉ. रामदेव साहू द्वारा लिखित 'ब्रह्माण्डमण्डलपरिज्ञानम् (४)' शोधलेख में वेद विज्ञान में प्रतिपादित ब्रह्माण्ड के स्वरूप को स्पष्ट किया गया है। प्रो. गणेशीलाल सुथार द्वारा लिखित 'पं. मधुसूदन ओझाकी 156वीं जयन्ती' शोध लेख में पं. मधुसूदन ओझा के अवतदान को स्पष्ट किया गया है। प्रो. कैलाश चतुर्वेदी द्वारा लिखित 'वेदवाचस्पति पं. मोतीलाल शास्त्री' लेख में पं. मोतीलाल शास्त्री के महत्त्वपूर्ण वेदविज्ञान विषयक शोध कार्य का विवरण प्रस्तुत किया गया है। डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा लिखित 'आचार्य वीरेश्वरशास्त्री द्राविड़' लेख में आचार्य वीरेश्वर शास्त्री द्राविड़ की व्यक्तित्व विषयक जानकारी प्रदान की गयी है। अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा